जल है, तो जीवन है

डॉ.कृष्ण कुमार मिश्र

इस सृष्टि की रचना जल से हुई है। पृथ्वी पर जीवन है क्योंकि यहाँ जल जहां तक हमें ज्ञात है, समूचे ब्रह्माण्ड में सिर्फ धरती पर ही जीवन है। यह एकमेव जीवित ग्रह है। वह इसलिए क्योंकि धरती पर जल, द्रव रूप में मौजूद है। धरती का तापमान जीवन के अनुकूल है। पारलौकिक जीवन की खोज में वैज्ञानिक सर्वप्रथम वहां पर जल की मौजूदगी के निशान खोजते हैं।

अगर किसी खगोलीय पिंड पर जल है तो ही जीवन की संभावना बनती है। निष्कर्ष यह है कि जल है, तो ही जीवन है। जल के बिना जीवन की कल्पना भी मुश्किल है। दुनिया की सभी सभ्यताओं में जल को बहुत महत्व दिया गया है। जल उन सभी के चिंतन–मनन के केंद्र में रहा है। भारत की सनातन परंपरा में जीवन के संघटनात्मक मूल तत्व के रूप में जो पाँच तत्त्व बताये जाते हैं, जल उनमें एक प्रमुख तत्त्व है। सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल मुनि ने इन्हें पंचमहाभूत कहा है। भारतीय संस्कृति में समादृत महाकाव्य, श्रीरामचरितमानस में संतशिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है– 'क्षिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित यह अधम सरीरा ।। जल की महत्ता शास्त्रों में तो है ही, यह हमारे लोक में भी चिरंतन रूप से व्याप्त है।

हम जानते हैं कि दुनिया की अधिकांश सभ्यताओं का जन्म नदियों के किनारे ही हुआ है। धरती पर जीवन की आदि प्रजाति अमीबा से लेकर इंसान तक की जैव विकास की यात्रा वास्तव में जल

के साथ ही संपन्न हुई है। जल के साथ-साथ, जंगल और जमीन हमारी प्रकृति के अभिन्न अवयव हैं। सदियों से मनुष्य का इनसे गहरा आत्मिक सम्बन्ध रहा है। भारत में तो आरण्यक संस्कृति रही है। ऋषियों, मुनियों के आश्रम जीवन के कोलाहल से दूर अरण्य में होते थे। पहले के समय में मानव समाज का प्रकृति तथा पर्यावरण के साथ गहरा दातात्म्य था, उनमें परस्पर समरसता थी। लेकिन आधुनिक समय में भौतिक विकास, बाजारवाद, उदारीकरण तथा वैश्वीकरण के चलते इस सम्बन्ध की डोर टूट चुकी है। आज मनुष्य आधुनिकता के मोहक मकड़जाल में फँसता, और दिनोंदिन उसके दलदल में गहरे ही धँसता चला जा रहा है। आधुनिक भौतिक विकास के असंतुलित तथा एकांगी ढांचे ने प्रकृति के तमाम घटकों के मध्य के तान-बाने को छिन्न भिन्न कर दिया है।

धरती पर उपलब्ध जल

पृथ्वी पर जल यत्र, तत्र, सर्वत्र मौजूद है। हमारे धरातल पर तथा धरती के अंदर विविध रूपों में जल मौजूद है। यह धरती के ऊपर जलवाष्प तथा बादलों के रूप में उपस्थित है। पृथ्वी की सतह का लगभग तीन-चौथाई भाग (70.8%) जल से घिरा है। जल की सतह से ढँके होने के कारण वाह्य अंतरिक्ष से देखने पर पृथ्वी नीले रंग की दिखायी देती है। इसलिए इसे नीला ग्रह (ब्लू प्लैनेट) कहा जाता है। पृथ्वी पर मौजूद जल का करीब 97 प्रतिशत से ज्यादा भाग सागरों एवं महासागरों के रूप में है। समुद्र के जल में अनेक प्रकार के लवण एवं खनिज घुले होते हैं, जिसकी वजह से वह खारा होता है तथा पीने के लिए उपयुक्त नहीं होता है। धरती पर मौजूद कुल जल का 2.5 प्रतिशत हिस्सा सादा जल है जो हमारे उपयोग का हो सकता है। इस सादे जल का दो-तिहाई हिस्सा धुव्रीय प्रदेशों में हिमनदों के रूप में जमा है। धरती पर मौजूद कुल जल का करीब 0.6 प्रतिशत भूमिगत जल है। नदियों, झीलों, तालाबों तथा अन्य सतही जलस्रोतों के रूप में मौजूद जल की मात्रा महज 0.1 प्रतिशत है। प्रदूषण के चलते इन जल स्रोतों में उपलब्ध जल का करीब 20 प्रतिशत भाग ही अब पीने योग्य बचा है।

हमारे देश में सर्वाधिक जल की खपत कृषि में सिंचाई में होती है जिसका सर्वाधिक हिस्सा भूमिगत जल से आता है। ग्रामीण अंचलों में सिंचाई के अलावा पेयजल सहित दूसरी सभी आवश्यकताओं के लिए भूमिगत जल पर ही निर्भरता होती है। यहाँ भूजल के दोहन हेतु कुँओं, तालाबों तथा नलकूपों का

व्यापक इस्तेमाल होता है। सतह पर मौजूद जलस्रोतों में नदियाँ प्रमुख हैं। लेकिन नदियों में मौजूद जल की मात्रा धरती पर मौजूद कुल जल की मात्रा के केवल 0.0002 प्रतिशत है। गौरतलब है कि इस अल्पांश मात्रा पर मानव सभ्यता अधिकांश तौर पर निर्भर करती है। नदियों के किनारे स्थित गांवों, कस्बों, नगरों तथा शहरों की जल सम्बन्धी जरूरतों की पूर्ति प्रायः नदियों के जल से ही की जाती है। इतना ही नहीं, उपयोग के बाद उत्पन्न अपशिष्ट भी नदियों में ही प्रवाहित किए जाते हैं। एक तरह हमारी नदियां कचरे के निपटान का आसान जरिया भी हैं। इसीलिए देश की करीब सभी नदियां प्रदूषण के बोझ तले सिसक रही हैं। इस गंभीर समस्या की तरफ ध्यान नहीं दिया गया तो निकट भविष्य में लोगों को भीषण जल संकट का सामना करना पड़ सकता है। जल एक अमूल्य प्राकृतिक संसाधन है। उसका इस्तेमाल किफायत से करने की जरूरत है। वास्तव में सबके लिए साफ पानी की उपलब्धता आज के समय की सबसे बड़ी चुनौती है।

नदियाँ सभ्यता की जीवनरेखा रही हैं। इसीलिए नदियां हमारी संस्कृति में सदा सर्वथा पूज्य रही हैं। वे समस्त जल धाराएँ, जो धरती पर स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होती हैं, नदियाँ कहलाती हैं। भारत में छोटी–बड़ी कुल 10 हजार से ज्यादा नदियां हैं। देश की प्रमुख नदियों में गंगा, यमुना, सिंधु, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, ताप्ती, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी, महानदी इत्यादि का उल्लेख किया जा सकता है। प्राचीन काल से नदियाँ हमारे देश का प्रमुख जल स्रोत रही हैं। हमारी संस्कृति एवं परम्पराओं में नदियाँ रची बसी हैं। हमारे तीज, त्यौहारों, तथा उत्सवों में नदियां अभिन्न रूप से शामिल रही हैं। चाहे वह मेले–ठेले का आयोजन हो, या फिर धार्मिक व सांस्कृतिक महोत्सव। भू–सतह पर जल की विशाल चलती–फिरती जलराशिरूपी ये नदियाँ अपने किनारे बसी आबादी, गांवों, कस्बों, बस्तियों, नगरों और शहरों को सुरक्षा, संपन्नता और खुशहाली का भरोसा दिलाती हैं। एक संरक्षित सदानीरा नदी हमेशा जीवनदायिनी होती है। हमारे पूर्वजों ने इसीलिए इन्हें पूज्य माना, और इसकी पवित्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने का हरसंभव प्रयास किया। नदियाँ निरंतर बहती रहें, प्रवाहमान रहें, यह प्रकृति की एक अनिवार्य आवश्यकता है।

नदियाँ सिंचाई एवं निस्तार की विधाओं के हिसाब से लाभदायक हैं। इनमें जल प्रपात बनते हैं जिनसे जलविद्युत उत्पन्न होती है। ये सुरम्य तथा

नैसर्गिक वातावरण तथा शुद्ध पर्यावरण प्रदान करती हैं। इतना ही नहीं, ये सैलानियों को मनोरंजन तथा नागरिकों को रोजगार के साधन सुलभ कराती हैं। नदियों के तटों पर ही धार्मिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक महत्व के स्थल प्रायः स्थित होते हैं। ये प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की जन्मदात्री हैं। इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि लगभग 5000 वर्ष पूर्व पहली मानव सभ्यता नदियों के किनारे विकसित हुई। संसार की कई प्राचीन सभ्यताएँ भी नदियों के किनारे फली–फूलीं। मंद जल गति के कारण इनके जल मार्गों का आवागमन के रूप में प्रयोग होता है। नदियाँ भूमिगत जल का प्रचुर भण्डार होती हैं।

भारत में साल भर के दौरान औसतन 110 सेंटीमीटर बरसात होती है। वर्षा जल के रूप में भारतीय भूभाग को साल भर में 4000 अरब घन किलोमीटर जल प्राप्त होता है। बरसात के मौसम में कुल 200 घंटे बारिश होती है। बारिश से प्राप्त जल का आधा हिस्सा सिर्फ 25 से 30 घंटों की तेज बरसात में मिल जाता है। इस वर्षा का केवल 20 प्रतिशत जल ही हम संग्रह कर पाते हैं। शेष 80 प्रतिशत जलराशि बहकर बेकार चली जाती है। भारत में सभी नदी द्रोणी में औसत वार्षिक प्रवाह करीब 1,869 अरब घन किलोमीटर है। फिर भी स्थलाकृतिक, जलीय और अन्य दबावों के कारण प्राप्त धरातलीय जल का केवल लगभग 690 अरब घन किलोमीटर जल का ही उपयोग किया जा सकता है।

हिमालय से निकलने वाली गंगा और यमुना जैसी हिमपोषित नदियां भारत के विस्तृत मैदानी इलाकों की जीवनरेखा हैं। इन नदियों द्वारा लाये गये तलछट के जमा होने से मैदानों की मिट्टी बहुत उपजाऊ होती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यही कारण है कि इस उर्वर भूक्षेत्र में मानव प्राचीन काल से निवास करता रहा है। ईसा से तीसरी सदी पूर्व मौर्य साम्राज्य से लेकर सोलहवीं सदी के मुगल साम्राज्य तक, सभी गंगा के मैदानी इलाकों में ही फले–फूले। आज हमारे देश की करीब 30 प्रतिशत जनसंख्या गंगा–यमुना के मैदानों में निवास करती है।

गंगा हमारे देश की महज एक नदी ही नहीं हैं, बल्कि वह कोटि–कोटि आस्थावानों की भावनात्मक आस्था का आधार भी हैं। वास्तव में गंगा भारतीय संस्कृति का ऐसा महाप्रवाह हैं जो हजारों साल से लोक और शास्त्र, दोनों में सतत प्रवाहमान हैं। यह प्रवाह सदियों से भारतीय भूखंड के लोकमानस को निरन्तर संपोषित

तथा अनुप्राणित करता रहा है। गंगा लोकजीवन में पवित्रता, निर्मलता, नैरन्तर्य तथा मोक्षदायी अमृत का प्रतीक हैं। गंगा किस तरह से हमारे लोकजीवन, लोकचिंतन तथा लोकपरंपराओं के केन्द्र में रही हैं, इसके अनेकानेक उदाहरण हमारे शास्त्रों में व्यापक रूप से मिलते हैं।

शास्त्रों में मान्यता है कि उत्तराखंड के देवप्रयाग में भागीरथी तथा अलकनंदा नदियों के संगम से गंगा नदी का निर्माण होता है। भागीरथी नदी गोमुख नामक ग्लेशियर से निकलती है जो कि गंगोत्री से 18 किलोमीटर दूर ऊंचाई पर सुदूर हिमालय में स्थित है। प्रयागराज में यमुना नदी आकर गंगा में मिलती है। इस स्थान को संगम के नाम से जाना जाता है। जन विश्वास है कि प्रयागराज में गंगा, यमुना के साथ अदृश्य सरस्वती नदी का संगम होता है। इसीलिए यहां के संगम को त्रिवेणी संगम भी कहते हैं। प्रयागराज को संगमनगरी भी कहा जाता है। यह सभी तीर्थों में श्रेष्ठ है इसलिए इसे तीर्थराज भी कहते हैं। संसार का सबसे बड़ा मेला, कुंभ मेले के नाम से प्रयागराज में लगता है। हजारों वर्षों से लग रहे इस अद्भुत एवं अद्वितीय मेले को यूनेस्को ने विश्व विरासत का दर्जा भी दिया है। पर्यावरणविदों का कहना है कि गंगा की पारिस्थितिकी पर यदि जल्दी ध्यान नहीं दिया गया तो ऐसा हो सकता है कि सन् 2050 तक गंगा का अविरल अस्तित्व ही न रहे। तब गंगा में केवल बारिश के मौसम में पानी रहेगा, बाकी समय उनका तल सूखा रहेगा।

जल प्रकृति की एक अनमोल भेंट है। धरती पर जल की कुल मात्रा नियत है। हम जल का निर्माण नहीं कर सकते। ऐसे में हमारा ध्यान जल स्रोतों को सहेजने, तथा उनके संरक्षित करने पर होना चाहिए। आज समय की मांग है कि हम जल स्रोतों को प्रदूषित होने से बचाएँ, इस अमूल्य संपदा को संभालकर रखें। जल की फिजूलखर्ची हमें रोकनी ही होगी। इसकी शुरुआत हमें अपने घरों से ही करनी होगी। देश भर में व्यापक जल–जागरण कार्यक्रम चलाए जाने की जरूरत है।

यदि हम अभी भी जल को लेकर दीर्घकालिक ठोस नीति बनाने तथा उसे अविलम्ब मजबूती से लागू नहीं कर पाये तो आने वाले समय में यह एक बड़ा संकट बन सकता है। आज भूजल के इस्तेमाल को नियंत्रित करने की जरूरत है, साथ ही उसे रीचार्ज करने के अधिकाधिक प्रयास वांछित हैं। तभी कृषि में सिंचाई के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध रह पाएगा। आने वाली पीढ़ी के लिए पेय जल की सुलभता बनी रह पाएगी।

***